अपने आपको पहचानें

जी हॉ, आप अद्‌भुत एवं अपार शक्तियों के मालिक हैं। चौंकिये मत, बल्कि अपने आपको समझिये, अपने स्वरुप को पहचानिए एवं अपनी शक्तियों को जाग्रत कीजिए तथा परोपकार में जुट जाइये। प्रकृति में पाये जाने वाले समस्त प्राणियों में मनुष्य सबसे उत्तम श्रेणी में आता है। इसलिए हमें यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव करना चाहिए कि सृष्टि ने हमें मनुष्य शरीर प्रदान किया है। मनुष्य का शरीर बाहरी रुप से देखने एवं जांच पडताल करने पर साधारण ही नजर आता है तथा अधिकतर लोग साधारण रुप में ही इस शरीर का उपभोग करके अपने जीवन की इतिश्री कर लेते हैं। उनके अन्दर इस तरह का विचार भी नहीं आता और न ही उन्हें किसी श्रोता से इसकी जानकारी मिलती है कि उनका यह शरीर अपार शक्तियों का मालिक है, वह भूत एवं भविष्य के ज्ञाता हो सकते हैं एवं वह जो चाहें, वह मानव कल्याण के लिये कर सकते हैं।

प्रकृति ने मनुष्य को जो पांच ज्ञानेन्द्रियां दी हैं उनकी क्षमतायें साधारण रुप से सीमित ही रखी है जैसे- मनुष्य के कान केवल 20 आवृत्ति से 20,000 आवृत्ति तक की ध्वनि तरंगों को ही सुन सकते हैं। हमारी आंखे, प्रकृति में पायी जाने वाली वृहद तरंगदैर्ध्य की तरंगों में से केवल एक ख्रास तरंगदैर्ध्य की तरंगों को ही देख पाती हैं जो प्रकाश किरणों के नाम से जानी जाती हैं। साधारण ध्वनि तरंगो, अल्ट्रासाउन्ड़ तरंगों, इन्फ्रारेड तरंगों, अल्ट्रावायलेट तरंगों, इलैक्ट्रोमैगनेटिक तरंगों एक्स तरंगों, गामा तरंगों इत्यादि को हमारी आंखें नहीं देख पाती हैं। आज हम उपरोक्त सभी तरंगों को किसी न किसी उपकरण की मद्‌द से महसूस करते हैं तथा उनका उपयोग मानव कल्याण के लिये करते हैं।

मनुष्य के अंदर प्रकृति ने इतनी अपार शक्तियां व क्षमताएं दी हैं कि यदि वह चाहे तो प्रकृति द्वारा प्रदान की गई सभी सुविधाओं, जिन्हें साधारण तौर पर सुना, देखा अथवा महसूस नहीं किया जा सकता है, का उपभोग कर सकता है। अब प्रश्न यह उठता है कि मानव में ये शक्तियां हैं भी अथवा नहीं, इसका क्या प्रमाण है? इसके लिए आइए, जरा वैज्ञानिक तरीके से हल खोजने की कोशिश करें। उदाहरण के लिए यदि किसी इंजीनियर से यह कहा जाये कि उसके पास जो भी ज्ञान अथवा जानकारी है उसके अनुसार एक मशीन बनाकर दे तो वह इंजीनियर अपनी सभी जानकारियों एवं क्षमताओं का प्रयोग करके ऐसी मशीन बनायेगा जोकि उसके अनुसार उसके पास उपलब्ध सम्पूर्ण ज्ञान व क्षमताओं के अनुरुप होगी। जब यह बात एक इन्सान पर लागू होती है तो वह प्रकृति पर भी अवश्य लागू होती है क्योंकि प्रकृति द्वारा बनायी गयी समस्त कृतियों में अब तक मनुष्य ही सबसे श्रेष्ठ कृति है। इससे सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि प्रकृति के पास जो भी शक्तियां, ज्ञान व क्षमताएं हैं उसने उन सभी को मनुष्य के अन्दर समाहित किया है। लेकिन बिना पूर्ण ज्ञान प्राप्त किये/सक्षम बने किसी के द्वारा उनका दुरुपयोग न हो, इसलिए साधारण तौर पर उन शक्तियों/क्षमताओं को गुप्त रखा गया है। प्रकृति ने मनुष्य में अपार क्षमतायें दी हैं, जैसे वह नंगी आंखों से उन कणों को, जो कि इलैक्ट्रोन माइक्रोस्कोप से देखे जा सकते हैं, देख सकता है, भूत एवं भविष्य में क्या होने वाला है जान सकता है, मनुष्य की वाणी से निकला हुआ एक-एक शब्द (वरदान/श्राप) प्रकृति के लिए आदेश हो सकता है जिसका प्रकृति पालन करेगी, आदि जो भी कल्पना आप कर सकते हैं उसे पूर्ण करने की शक्ति मनुष्य में प्रकृति ने प्रदान की है। परन्तु इसके लिए मनुष्य को अपने आप को प्रकृति की भांति निश्छल, निष्कपट, दयालु, सहनशील एवं सच का पालन करने वाला बनाना होगा। उपरोक्त अपार शक्तियों के बावजूद भी प्रकृति ने इस संसार रुप चक्र को चलाने के लिये मनुष्य को एक शक्ति से वंचित रखा है तथा वह है कि मनुष्य कालक्षय की प्रक्रिया को समाप्त नहीं कर सकता अर्थात् उसकी मृत्यु होनी

डा. भीष्म कुमार, वैज्ञानिक "ई"

ROORKEE- 247667 (U.P.)

ही है। लेकिन प्रकृति ने मनुष्य को यह शक्ति अवश्य प्रदान की है कि वह इस प्रक्रिया को धीमा अथवा तेज अवश्य कर सकता है। वह अपनी मृत्यु के लिए इच्छित समय का चयन कर सकता है।

मनुष्य यदि चाहे तो जिस प्रकार हम टी.वी. अथवा ट्रांजिस्टर को ट्यूनिंग करके विभिन्न स्टेशनों से प्रसारित कार्यक्रम देख व सुन सकते हैं उसी प्रकार किसी दूसरे मनुष्य के मस्तिष्क में क्या विचार आ रहे हैं, को वह अपने मस्तिष्क के अन्दर उपलब्ध ट्रान्समीटर को दूसरे मनुष्य के मस्तिष्क में उपलब्ध ट्रांसमीटर से ट्यून करके जान सकता है। ऐसा प्रायः हमारे ऋषि-मुनि व ज्ञानी लोग करते आये हैं। प्रकृति ने अन्य प्राणियों को केवल एक-एक शक्ति ही दी है जो कि साधारण रुप से गुप्त न होकर शुरु से ही सक्रिय है, जैसे - कुत्ते को सूंघन की अद्भुत शक्ति, चमगादड़ को अल्ट्रासाउन्ड तरंगों को पैदा करने एवं उन्हें पुनः प्राप्त कर (राडार पद्धति) आवश्यक जानकारियां प्राप्त करने की शक्ति, उल्लू व कुछ अन्य जानवरों को इन्फ्रारेड़ किरणों के माध्यम् से रात्रि में देखने की शक्ति इत्यादि। इसी प्रकार कुछ लोगों में भी कभी-कभी कुछ शक्तियां प्रारम्भ से ही सक्रिय होने के प्रमाण सामने आये हैं जैसे - शकुन्तला देवी, जिनका मस्तिष्क कम्प्यूटर से तेज कार्य करता है जिसकी विभिन्न स्तरों पर जांच भी की जा चुकी है।

अब प्रश्न यह उठता है कि प्रकृति ने जो अपार शक्तियां (साधारणतया गुप्त हैं) मनुष्य को दी हैं उन्हें कैसे प्राप्त/जाग्रत किया जा सकता है। इस संबंध में विज्ञान की एक अद्भुत खोज के उदाहरण से काफी कुछ समझा जा सकता है। आप सभी प्रकाश से परिचित हैं, लेकिन आपको इसका अनुमान नहीं होगा कि साधारण सी दिखने वाली प्रकाश की किरण कितनी शक्तिवान है। आप शायद "लेजर" शब्द से अवश्य ही परिचित होंगे जो कि प्रकाश किरणों का ही दूसरा रुप है एवं जिसमें प्रकाश के सभी अणुओं की गति एक ही दिशा में कर दी जाती है। आप को जानकर आश्चर्य होगा 2000 वाट के बल्ब के प्रकाश को 5 किमी. की दूरी से देखना संभव नहीं है जबकि 4 वाट की लेजर को चन्द्रमा से देखा जा सकता है। अतः अपनी सीमा शक्तियों को केंद्रीभूत करने पर उसमें समाहित शक्ति का असली रुप सामने आता है। इसलिए मनुष्य को भी अपनी शक्तियों को केन्द्रीभूत अथवा जागृत करने के लिए अपने मन की गति एक दिशा में करने की आवश्यकता है अर्थात् मन को एकाग्र करने से एक-एक करके सभी शक्तियां प्रकट होने लगती हैं। लेकिन मन को एकाग्र करने के लिए प्राथमिक आवश्यकतायें हैं जिनका उल्लेख विभिन्न पुस्तकों में उपलब्ध है। यहां एक बात का उल्लेख करना अति आवश्यक है कि यदि मन की एकाग्रता के साथ मनुष्य सदाचारी बनने का भी प्रयास करता है तो वह शक्तियां प्राप्त होने पर देवता तुल्य बन जायेगा। परन्तु लेकिन यदि उसकी प्रवृत्तियां दुराचारी मनुष्य की ही रहीं तो वह शक्तियां प्राप्त होने पर एक राक्षस ही बनेगा।

हमारा इतिहास बड़ा ही गौरवमय रहा है। हमारा देश ऋषि मुनियों का देश है जिन्होंने अपने मन को एकाग्र करके अपार शक्तियों को जागृत कर जन कल्याण किया। हम सभी के अन्दर भी इसी प्रकार अपार शक्तियां तथा राक्षसी एवं दैवीय प्रवृत्तियां विद्यमान रहती हैं। आज सिर्फ आवश्यकता यह है कि समय रहते हुए प्रयास करके हम उन अपार शक्तियों को जागृत करें तथा दैवीय प्रवृत्तियों को ग्रहण कर जन कल्याण करते हुए इस मानव जीवन को सफल बनायें। अधिकतर लोग मनुष्य जीवन को पशु-पक्षियों के जीवन की भांति ही निर्वाह करते हैं तथा जब उन्हें इसका ऐहसास होता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। इसलिए कहीं देर न हो जाये, आइये, हम सभी अपने स्वरुप को पहचानते हुए, अपने असली मानव स्वरुप में आने के लिये आज से ही प्रयास शुरु कर दें।

इस विषय पर वैज्ञानिक तथ्यों को प्रस्तुत करते हुए लिखने के लिए बहुत कुछ है लेकिन यहां सब कुछ व्यक्त कर पाना संभव नहीं है।